दीनदयाल जी न सिर्फ अपने देष में बल्कि विदेषों में भी अपने विद्धत्व के कारण अमिट छाप छोड़ गए। एक बार अमरीका प्रवास पर जाने से पहले उन्हें विदाई देने वालों में एक ने प्रष्न किया–

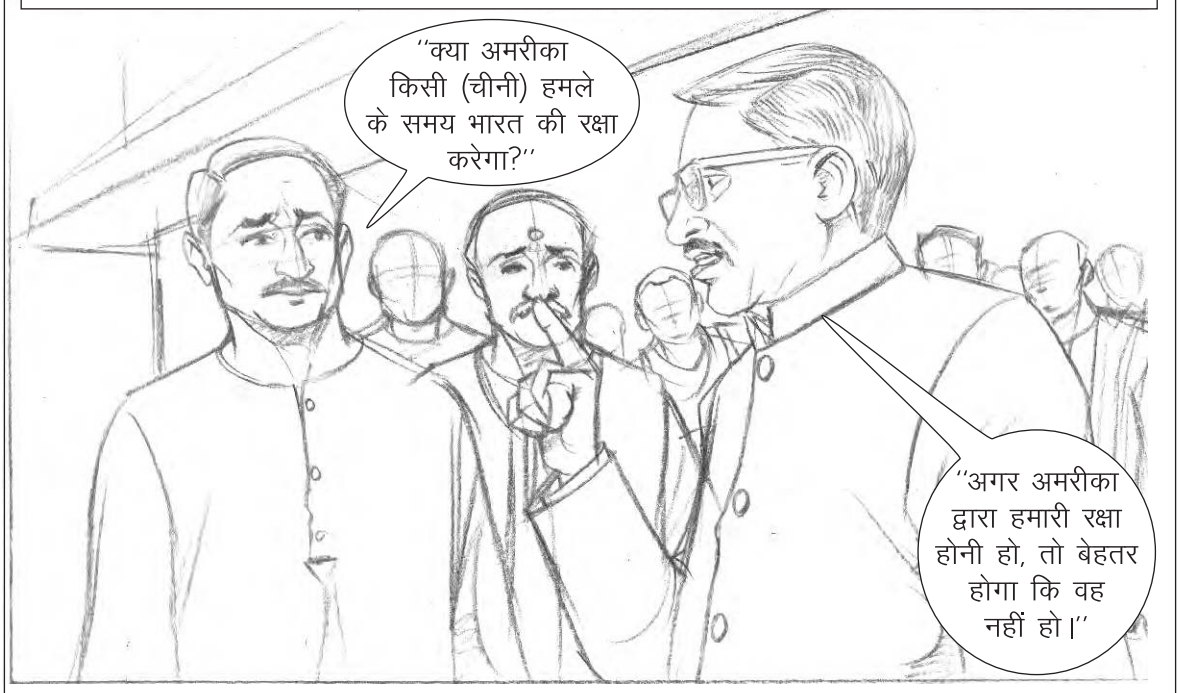

भारतीय आत्मसम्मान को स्थापित करते हुए अमरीकी यात्रा के दौरान कॉलेज के विद्यार्थियों के बीच उनका भाशण हुआ।